सियारामशरण गुप्त रचनावली

सम्पादकः ललित शुक्ल

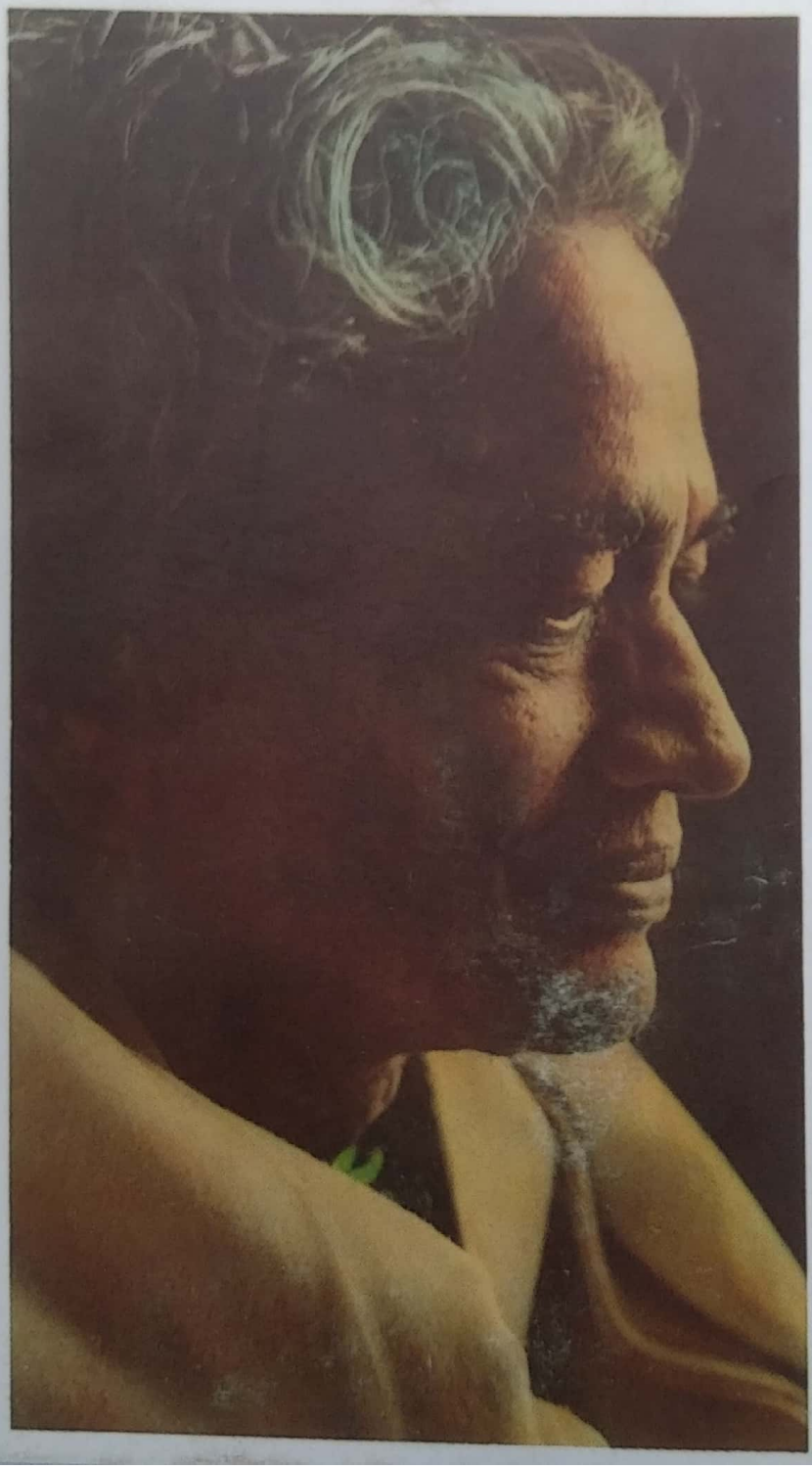

Scanned with OKEN Scanner

सियारामशरण गुप्त रचनावली

सियारामशरण गुप्त अपनी कृतियों में नव्यतम
शैली की प्रस्तुति के लिए प्रख्यात हैं।
कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और
ललित निबंध के क्षेत्र में उन्होंने
अपनी रचना-प्रतिभा का परिचय दिया है।
प्रस्तुत रचनावली में गुप्तजी का पूरा साहित्य
संकलित किया गया है।
सर्वथा नवीन शैली का प्रस्तुतीकरण
यहाँ एक साथ पाठकों के लिए उपलब्ध है।
कवि का रचा हुआ समग्र साहित्य
रचनावली के पाँच खंडों में फैला हुआ है।

गुप्तजी अपने वर्तमान के प्रति
सचेत रचनाकार थे।
वे अतीत में भी आज के यथार्थ
को देखने-रचने का प्रयत्न करते थे।
गांधीवादी चिन्तन की झलक उनकी रचनाओं
में सर्वत्र मिलती हैं।
नये को अपनाने की ललक उनमें अवश्य थी
पर भारतीयता के प्रति उनका समर्पण भाव
बेजोड़ था। सद्भाव, समन्वय, भाईचारा,
निम्न वर्ग के प्रति सदाशयता आदि विशेषताएँ
गुप्तजी के साहित्य को आज भी
सार्थकता प्रदान करती हैं।
राष्ट्र-प्रेम, अहिंसा, सत्य और मानवता की उपासना
उनके साहित्य का ध्येय रहा है।
रचनावली के रूप में गुप्तजी का साहित्य
नये रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है।

मूल्य : 1,000.00 (पाँच खण्डों में)
ISBN – 81-7016-091-X

Scanned with OKEN Scanner

सियारामशरण गुप्त रचनावली ।।

3

Scanned with OKEN Scanner

सियारामशरण गुप्त रचनावली ॥

सम्पादक : ललित शुक्ल

खण्ड तीन

[गोद, अंतिम आकांक्षा, नारी, मानुषी, कष्ट का प्रतिदान, रुपये की समाधि, पथ में से, बैल की बिक्री, त्याग, कोटर और कुटीर, काकी, अपरिचिता, चुक्खु, प्रेत का पलायन, रामलीला, कृपावती, मेहतरानी, हली, पुण्य-पर्व]

Scanned with OKEN Scanner

ISBN—81-7016-091-X

कापीराइट एवं प्रकाशक : साहित्य सदन, झाँसी

एकमात्र वितरक
किताबघर
24/4866, अंसारी रोड
दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

प्रथम संस्करण
1992

मूल्य
एक हज़ार रुपये (पाँच खंड)

मुद्रक
चोपड़ा प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032

SIARAM SHARAN GUPT RACHANAWALI (Hindi)
Edited by Lalit Shukla
Price : Rs. 1,000.00 (Five Volumes)

Scanned with OKEN Scanner

क्रम

उपन्यास

गोद : 11
अंतिम आकांक्षा : 69
नारी : 136

कहानियाँ

मानुषी : 231
कष्ट का प्रतिदान : 243
रुपये की समाधि : 249
पथ में से : 257
बैल की बिक्री : 260
त्याग : 266
कोटर और कुटीर : 268
काकी : 273

अन्य कहानियाँ

अपरिचिता : 276
चुक्खू : 301
प्रेत का पलायन : 307
रामलीला : 316
कृपावती : 320
मेहतरानी : 332
हली : 334

नाटक

पुण्य-पर्व : 356

Scanned with OKEN Scanner

ललित शुक्ल हिन्दी साहित्य के एक ऐसे महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं जो मानव-जीवन के यथार्थ को साहित्य का मुख्य आधार मानते हैं। कविता के क्षेत्र में इन्होंने स्वप्ननीड़, समरजयी, त्रयी 1, अन्तर्गत, सहमी हुई शताब्दी और सागर देख रहा है नामक कृतियों से अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। धुँधलका और आँच के रंग जैसे कहानी-संकलनों में अभिव्यक्ति के नये धरातल सामने आए हैं। दूसरी एक दुनिया और शेष कथा के आत्मीय रचाव की भंगिमा अत्यंत मुखर है। सोज़ालोबो और पार्वती के कंगन बहुचर्चित रिपोर्ताज़ संकलन हैं। नया काव्य : नये मूल्य एवं सियारामशरण गुप्त : सृजन और मूल्यांकन आदि समीक्षा-कृतियों में रचनात्मक समीक्षा की बानगी उभरी है। सियारामशरण गुप्त रचनावली का संपादन उनकी साहित्य-यात्रा की मानक उपलब्धि है।

सम्पर्क : शांतिद्वीप, 4 वाणी विहार, उत्तमनगर
नयी दिल्ली-110059

Scanned with OKEN Scanner

सियारामशरण गुप्त रचनावली

प्रार ऐसे न उठो य-
तुम चिरन्तन सारथी ये हँस रहे,
रास है रथ की तुम्हारे हाथ में।
शरण हूँ मैं, दे रहे उद्बोध तुम!
तो वही उद्बोध फिर से सुन सकूँ —
“छोड़कर सब धर्म आ मेरे शरण,
सर्व पाप विमुक्त कर दूँगा तुझे!”
कह सकूँ सुनकर असंशित-हे हरे!
जो कहा तुमने, करूँगा मैं वही।

— सियारामशरण गुप्त